# पाठ - 9
# नफिल नमाजें

# الدرس التاسع - هندي
# النوافل

**सुनन रवातिब** : हर मुसलमान, मर्द और औरत के लिए मुक़ीम की हालत में बारह रकअतों का एहतमाम जरुरी है। चार रकअत नमाज़े ज़ुहर से पहले, और दो रकअत नमाज़े ज़ुहर के बाद, दो रकअत मगरिब के बाद, दो रकअत इशा के बाद और दो रकअत फ़ज्र से पहले,
उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा रजियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि मैं ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुए सुना

مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يُصَلِّي للهِ كُلَّ يَوْمٍ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ رَكْعَةً تَطَوُّعًا، غَيْرَ فَرِيضَةٍ، إِلَّا بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ، أَوْ إِلَّا بُنِيَ لَهُ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ

जो मुसलमान बन्दा अल्लाह के लिए हर दिन फर्ज़ के एलावा बारह रकअतें नफिल पढ़ता है तो अल्लाह उसके लिए जन्नत में एक घर का निर्माण कर देता है या उसके लिए जन्नत में एक घर बना दिया जाता है, सभी रवातिब सुन्नतों और नफ़्ल नमाज़ों के ताल्लुक़ से अच्छा यही है कि उन्हें अपने घर में अदा किया जाए। जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

إِذَا قَضَى أَحَدُكُمُ الصَّلَاةَ فِي مَسْجِدِهِ، فَلْيَجْعَلْ لِبَيْتِهِ نَصِيبًا مِنْ صَلَاتِهِ، فَإِنَّ اللهَ جَاعِلٌ فِي بَيْتِهِ مِنْ صَلَاتِهِ خَيْرًا

जब तुम में से कोई व्यक्ति नमाज़ पढ़ ले तो अपनी नमाज़ों में से अपने घर का हिस्सा भी बनाये। क्योंकि अल्लाह तआला उसके अपने घर में नमाज़ अदा करने को खैर व बरकत का कारण बनाएगा, ज़ैद बिन साबित रजियल्लाहु अन्हु से मुत्तफ़क़ अलैह हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : فَإِنَّ خَيْرَ صَلَاةِ الْمَرْءِ فِي بَيْتِهِ إِلَّا الصَّلَاةَ الْمَكْتُوبَةَ फ़र्ज़ नमाज़ के सिवा, इंसान की बेहतर नमाज़ घर की है,

**नमाज़े वित्र** : मुसलमानों के लिए वित्र की नमाज़ अदा करना मसनून है। यह सुन्नते मुअक्कदा है और इसका वक़्त इशा की नमाज़ के बाद से तुलूए फज्र तक है और जो जाग सकता हो, उसके लिए बेहतर वक़्त, रात का आख़िरी हिस्सा है। यह उन सुन्नतों में से है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी नहीं छोड़ा बल्कि हमेशा सफ़र में हों या घर में, उसे अदा करते रहे, वित्र की सबसे कम संख्या एक रकअत है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में ग्यारह रकअतें पढ़ा करते थे जैसा कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से उल्लिखित है कि

أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، كَانَ يُصَلِّي بِاللَّيْلِ إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً، يُوتِرُ مِنْهَا بِوَاحِدَةٍ

अल्लाह के रसूल ;सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात में ग्यारह रकअतें अदा करते थे। उनमें एक रकअत वित्र की होती थी रात की नमाज़ें दो दो रकअतें करके पढ़ी जाती हैं। अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि एक आदमी ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रात की नमाज़ के बारे में पूछा तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنَى مَثْنَى، فَإِذَا خَشِيَ أَحَدُكُمُ الصُّبْحَ، صَلَّى رَكْعَةً وَاحِدَةً تُوتِرُ لَهُ مَا قَدْ صَلَّى

रात की नमाज़ दो–दो रकअत कर के पढ़ी जाती है। जब तुम में से कोई सुबह होने से डरे तो एक रकअत पढ़ ले, जो कुछ पढ़ा होगा, उनके लिए यह वित्र हो जायेगी वित्र में कभी रुकूअ के बाद दुआएकुनूत पढ़ना मुस्तहब है, क्योंकि हसन बिन अली रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें कुछ कलिमे सिखाए और कहा कि उन्हें वित्र में पढ़ा करो, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है। क्योंकि अकसर सहाबियों ने जिन्होंने वित्र के बारे में उल्लेख किया है, उन्होंने आपके कुनूत का उल्लेख नहीं किया है। इसी तरह जिसकी रात की नमाज़ें छूट गयी हों, उसके लिए मुस्तहब है कि वह दिन में उनका क़ज़ा करे। वह दो रकअत, चार, छे, आठ, दस या बारह रकअतें करके पढ़ ले क्योंकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा किया है।